तृष्णा या तृप्ति

तृष्णा

हर लक्ष्य में, हर भेद में,
हर भूख में, हर स्वप्न में,
हूं समाहित में।

हर शोहरत में, हर रौनक में,
हर जरूरत में, हर आदत में
हर ख्वाइश में, आजमाइश में
हूं समाहित में।

हूं संचालक इस धरा की में,
तेरा मुझसे मेल कहां ....

तृप्ति

तू मांग है, मैं पूरक हूं।
तू जरूरत है, मैं संतुष्टि हूं।
तू ग्राही है, मैं दाता हूं।
तू आदी है, मैं अंत हूं।
तेरा–मेरा बस मेल यही है,
मेरा जन्म ही तेरा अंत है।

सुनील कुमार जायसवाल
हिन्दी सहायक